जागरण
jagran.com

प्रस्तुति

लक्ष्मी पूजन 2024

जागरण
jagran.com

प्रस्तुति

लक्ष्मी पूजन 2024

जागरण
jagran.com

लक्ष्मी पूजन 2024

त्योहारी खरीदारी के शुभ मुहूर्त

कार्तिक मास का कृष्ण पक्ष अपने आप में बड़ा विशिष्ट और अनूठा है। इस 15 दिन के पक्ष में गुरु पुष्य, एकादशी धनतेरस, रूप चौदस और दीपावली जैसे प्रमुख त्योहारों का आगमन होता है। भारतीय जनमानस इस पक्ष काल को वर्ष का सर्वश्रेष्ठ पक्ष मानते हैं, क्योंकि यह सनातन संस्कृति के साथ-साथ पारिवारिक और सांस्कृतिक उत्सव है इस दौरान स्मृति स्वरूप लोग खरीदी भी करते हैं और चिरस्थायी समृद्धि के लिए मुहूर्त का चयन करते हैं।

24 अक्टूबर– गुरु पुष्य योग

24 अक्टूबर को कालाष्टमी भी है। इस दिन, पुष्य नक्षत्र पूरे दिन भर रहेगा क्योंकि गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र का होना सर्वार्थ सिद्धि नाम का योग बनता है। इस दृष्टि से, पूरे दिन नए कार्य की शुरुआत, खरीदारी, पूजन पाठ, व्यावसायिक प्रतिष्ठान का आरंभ आदि कार्य किया जा सकते हैं। फिर भी कुछ विशेष मुहूर्त भी हैं।

प्रात: 6:30 से 8:00 (पूजन की प्रक्रिया की जा सकती है)	**शुभ**
प्रात:11:00 से दोपहर 12:30	**चंचल**
दोपहर 12:30 से 2:00	**लाभ**
दोपहर 2:00 से 3:30	**अमृत**
शाम 5 से 6:30	**शुभ**
शाम 6:30 से 9:30	**अमृत व चंचल**

29 अक्टूबर: धन त्रयोदशी

मंगलवार 29 अक्टूबर 2024 को भौम प्रदोष, इसी दिन धनतेरस। मान्यता अनुसार धनत्रयोदशी को धन्वंतरि त्रयोदशी भी कहा जाता है। मूल रूप से आयुर्वेद में धन्वंतरि जी के प्राकट्य का उत्सव मनाने की परंपरा का उल्लेख बताया जाता है। आयुर्वेद में स्वास्थ्य को ही मूल रूप से धन की संज्ञा दी गई है। फिर भी लोग परंपरा में धनतेरस के रूप में भौतिक साधनों के लिए बर्तन अथवा मूर्ति या स्वर्ण आभूषण, वस्त्र, बही खाता आदि वस्तुओं की खरीदी करते हैं। क्योंकि भूमि प्रदोष भी इसी दिन है, इस दृष्टिकोण से भी है यह पूरा दिन भी खरीदी आदि कार्यों के लिए शुभ है।

प्रात: 9:30 से 11:00	**चंचल**
प्रात: 11:00 से दोपहर 12:30	**लाभ**
दोपहर 12:30 से 2:00	**अमृत**
अपराह्न 3:30 से शाम 5:00	**शुभ**
शाम 7:30 से 9:00	**लाभ**

30 अक्टूबर को रूप चतुर्दशी

धर्मशास्त्र में रूप चौदस को नरक हरा चतुर्दशी भी कहा जाता है। रूप चौदस को इसलिए श्रेष्ठ माना गया है कि सूर्य के उदय के पूर्व शरीर की उबटन की क्रिया संपादित करने से सौंदर्य बढ़ता है। इस दृष्टि से प्रात: उठकर के पूरे शरीर पर उबटन लगाकर स्नान करने की परंपरा है। किंतु परिस्थितियों के अनुसार, घर पर भी उबटन लगाकर के स्नान किया जा सकता है और आदि शक्ति लक्ष्मी जी पूजा की जा सकती है। इस दिन बुधवार होने से दिनभर खरीदी की जा सकती है और पूजा पाठ या अनुष्ठान किए जा सकते हैं।

31 अक्टूबर को प्रदोष काल में दीपावली का महालक्ष्मी पूजन

पंचांग की गणना के अनुसार 31 अक्टूबर को महापर्व दीपावली मनाया जाएगा। माता महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने का यह विशेष दिन माना जाता है। इस दिन अर्थात प्रदोष काल में वृषभ लग्न की साक्षी में पूजन की जा सकती है। इसमें विशिष्ट इस प्रकार होगें-

शाम 5:37 से मुहूर्त आरंभ होगा। वहीं वृषभ लग्न भी गोधूलि बेला के साथ में संयुक्त रहेगा। अर्थात शाम 5:37 से लेकर के रात्रि 8:30 तक का मुहूर्त विशेष शुभ है।

।। श्री लक्ष्मी जी की पूजा।।

दीपावली : प्रदोषकाल में करें माता लक्ष्मी का पूजन

कार्तिक कृष्ण अमावस्या पर धन की अधिष्ठात्री देवी माता लक्ष्मी के पूजन का विधान है। माता लक्ष्मी का पूजन सायंकाल अर्थात प्रदोषकाल में विशेष माना गया है। हालांकि उद्योग व प्रतिष्ठानों में दिन के शुभ मुहूर्त में भी पूजन किया जा सकता है। दीपावली पर माता लक्ष्मी के साथ श्री गणेश व माता सरस्वती के पूजन का विशेष महत्व है। पूर्व दिशा की ओर चौकी रखकर उस पर स्वस्तिक का निर्माण करें तथा लाल कपड़ा बिछाएं। उस पर माता लक्ष्मी, श्री गणेश व सरस्वतीजी की मूर्ति अथवा चित्र स्थापित करें। समीप दक्षिणावर्ती शंख,श्रीयंत्र, एकाक्षी नारियल, नए नोटों की गड्डी, सोने-चांदी के सिक्के तथा झाड़ू को रखना चाहिए। चौकी के बाईं ओर तांबे अथवा चांदी का कलश स्थापित करें, दाईं ओर दीपक व धूप बत्ती आदि लगानी चाहिए। विधि पूर्वक देवी की स्थापना के बाद उद्योग व प्रतिष्ठानों में नए बहीखाते व कलम दवात का पूजन करना चाहिए। इसके बाद उन्हें देवी के समक्ष स्थापित कर पंचोपचार, षोड्षोपचार पूजन कर नैवेद्य व आरती करनी चाहिए। इस दिन देवी को अन्नकूट का भोग लगाया जाता है अर्थात विभिन्न प्रकार के पकवानों का भोग लगाना शुभ माना जाता है। मान्यता है धर्मशास्त्रीय विधि द्वारा माता लक्ष्मी का पूजन करने से वर्षभर सुख-समृद्धि बनी रहती है।

दीपावली पूजन के लिए आवश्यक सामग्री

दीपावली पर धन की अधिष्ठात्री देवी माता लक्ष्मी के पूजन के लिए सर्वप्रथम पांच गन्नों का मंडप बनाना चाहिए, उसके नीचे माता की स्थापना करनी चाहिए। ऋतुफल, शाक व अन्न का पुजापा महालक्ष्मी को अतिप्रिय है, इसमें सीताफल, सिंघाड़ा, ज्वार की बाली, अमर बेल आदि शामिल रहते हैं। इसके अलावा नए नोटों की गड्डियां, सोने-चांदी के सिक्के, सफेद कौड़ी, दक्षिणावर्ती शंख, श्रीयंत्र, नई झाड़ू आदि भी पूजन स्थल पर रखने की मान्यता है। मान्यता है इससे घर में वर्षभर स्थायी समृद्धि बनी रहती है। चौकी, तांबे अथवा चांदी का कलश तथा उस पर रखने के लिए नारियल व आम के पत्ते आवश्यक हैं। मौली, हार, फूल, धूप, दीप, कंकू (कुंकुम), चावल, अबीर, गुलाल, मेहंदी, इत्र तथा अभिषेक के लिए पंचामृत अनिवार्य है। महालक्ष्मी को धानी, बताशे, अनेक प्रकार के पकवान तथा फल का नैवेद्य लगाना चाहिए। पूजन स्थल पर सात बाती वाला दीपक लगाना विशेष शुभ माना जाता है। विधि पूर्वक पूजन के उपरांत दीपक, कर्पूर तथा फुलझड़ी से आरती करनी चाहिए।

।। मां लक्ष्मीजी के मंत्रों का जाप।।

विष्णुप्रिया मां लक्ष्मी को धन, संपदा, वैभव और संपन्नता की देवी माना जाता है। शुक्रवार का दिन मां लक्ष्मी को विशेष रूप से प्रिय है। इस दिन वैभव लक्ष्मी के व्रत और पूजन का विधान है। माना जाता है कि नियमित रूप से वैभव लक्ष्मी का व्रत रखता है उसे धन संबंधी किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता है। मां लक्ष्मी का श्रद्धा पूर्वक पूजन करने से धन-संपत्ति में वृद्धि होती है। घर में सुख और समृद्धि का आगमन होता है। आइए जानते हैं कुछ ऐसे मंत्रों के बारे में जिनका का जाप करने से मां लक्ष्मी जरूर प्रसन्न होती हैं और सभी मनोकामनाओं की पूर्ति करती हैं...

।। मां लक्ष्मी का बीज मंत्र।।

मां लक्ष्मीजी का आशीर्वाद पाने के लिए उनके बीज मंत्र का जाप कमल गट्टे की माला से करना चाहिए।

ऊँ श्रींह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ऊँ महालक्ष्मी नमः।।

।। श्री लक्ष्मी महामंत्र।।

मां लक्ष्मी का यह मंत्र धन, ऐश्वर्य, सौभाग्य और यश प्रदान करने वाला है। इस मंत्र को तिल के तेल का दीया जला कर 108 बार जाप करना चाहिए।

ऊँ श्रीं क्लीं महालक्ष्मी महालक्ष्मी एह्योहि सर्व सौभाग्यं देहि मे स्वाहा।।

।। धन संबंधी समस्या दूर करने का मंत्र ।।

मां लक्ष्मी को धन की देवी माना जाता है।
यदि आप कर्ज या धन संबंधी समस्या से परेशान हैं तो
मां लक्ष्मी के इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

**ऊँ ह्रीं श्री क्रीं क्लीं श्री लक्ष्मी मम गृहे धन पूरये,
धन पूरये, चिंताएं दूरये-दूरये स्वाहाः।।**

।। सर्व मनोकामना पूर्ति मंत्र ।।

मां लक्ष्मी के इस मंत्र का जाप करने और उन्हें कमल या
गुलाबी रंग के फूल अर्पित करने से सभी प्रकार
की मनोकामनाओं की पूर्ति होती है

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा।

।। सुख-समृद्धि के लिए मंत्र ।।

मां लक्ष्मी के इस मंत्र का जाप करने और
इस दिन इत्र और सुंगधित पदार्थ अर्पित करने से
आपके घर में सुख-समृद्धि का आगमन होगा।

या रक्ताम्बुजवासिनी विलासिनी चण्डांशु तेजस्विनी।
या रक्ता रुधिराम्बरा हरिसखी या श्री मनोह्लादिनी।।
या रत्नाकरमन्थनात्प्रगटिता विष्णोस्वया गेहिनी।
सा मां पातु मनोरमा भगवती लक्ष्मीश्च पद्मावती।।

।। श्री सूक्त पाठ।।

धन की अधिष्ठात्री देवी मां लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्ति के लिए ऋग्वेद में वर्णित श्रीसूक्त का पाठ एक ऐसी साधना है, जो कभी बेकार नहीं जाती हैं। आप भी दीपावली के पावन पर्व पर मां लक्ष्मी की आराधना करके शांति एवं समृद्धि का स्वयं अनुभव कर सकते हैं।

।। श्री सूक्त।।

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्त्रजां।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह।।
तां म आवह जात-वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरूषानहम्।।
अश्वपूर्वां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रमोदिनीम।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवी जुषताम।।
कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं।
पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देव-जुष्टामुदाराम।
तां पद्म-नेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।
आदित्य-वर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽक्ष बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।।
उपैतु मां दैव-सखः, कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे।।

।। श्री सूक्त पाठ ।।

क्षुत्पिपासाऽमला ज्येष्ठा, अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वान निर्णुद मे गृहात।।
गन्ध-द्वारां दुराधर्षा, नित्य-पुष्टां करीषिणीम।
ईश्वरीं सर्व-भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम।।
मनस: काममाकूतिं, वाच: सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्री: श्रयतां यश:।।
कर्दमेन प्रजा-भूता, मयि सम्भ्रम-कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले, मातरं पद्म-मालिनीम।।
आप: सृजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे।
निच-देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो ममावह।।
आर्द्रां य: करिणीं यष्टिं, पिंगलां पद्म-मालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो ममावह।।
तां म आवह जात-वेदो लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान विन्देयं पुरूषानहम्।।
य: शुचि: प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम्।
श्रिय: पंच–दशर्चं च, श्री-काम: सततं जपेत्।।
।। इति श्री सूक्तंपरिपूर्ण ।।

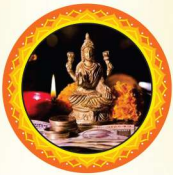

श्री सूक्त में लक्ष्मी के स्वरूपों का विवरण कुछ इस प्रकार मिलता है

धनमग्नि, धनम् वायु, धनम् सूर्यो धनम् वसुः अर्थात प्रकृति ही लक्ष्मी है और प्रकृति की रक्षा करके मनुष्य स्वयं के लिए ही नहीं, अपितु निस्स्वार्थ होकर पूरे समाज के लिए मां लक्ष्मी का सृजन कर सकता है। श्री सूक्त में आगे यह भी लिखा गया है-**न क्रोधो न मात्सर्यम न लोभो ना अशुभा मतिः** इससे तात्पर्य यह कि जहां क्रोध और किसी के प्रति द्वेष की भावना होगी, वहां मन की शुभता में कमी आएगी, जिससे वास्तविक लक्ष्मी की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होगी। मानसिक विकृतियों से चूंकि व्यक्ति और पूरे समाज को हानि होती है, अत: यह लक्ष्मी की प्राप्ति में बाधक हैं।

दीपावली के दिन श्री यंत्र की स्थापना करें। देवी महालक्ष्मी को कमलगट्टे की या लाल कमल के फूल की माला पहनाऐं। इस मंत्र का 1100 जाप करने के बाद श्री सूक्त का पाठ करें-

ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये
प्रसीद प्रसीद श्रीं हीं श्रीं ऊं महालक्ष्मयै नम:

।। श्री लक्ष्मी जी की आरती।।

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता
तुम को निश दिन सेवत, हर विष्णु विधाता....

ॐ जय लक्ष्मी माता...।।
उमा रमा ब्रह्माणी, तुम ही जग माता
सूर्य चंद्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता
ॐ जय लक्ष्मी माता...।।

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि सिद्धि धन पाता
ॐ जय लक्ष्मी माता...।।

तुम पाताल निवासिनी, तुम ही शुभ दाता
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी, भव निधि की त्राता
ॐ जय लक्ष्मी माता...।।

जिस घर तुम रहती सब सद्गुण आता
सब संभव हो जाता, मन नहीं घबराता
ॐ जय लक्ष्मी माता...।।

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता
ॐ जय लक्ष्मी माता...।।

शुभ गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि जाता
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता
ॐ जय लक्ष्मी माता...।।

महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई नर गाता
उर आनंद समाता, पाप उतर जाता
ॐ जय लक्ष्मी माता...।।

।। श्री कुबेर आरती: ।।

ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे, स्वामी जै यक्ष जै यक्ष कुबेर हरे।
शरण पड़े भगतों के, भण्डार कुबेर भरे। ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे...।।

शिव भक्तों में भक्त कुबेर बड़े, स्वामी भक्त कुबेर बड़े।
दैत्य दानव मानव से, कई-कई युद्ध लड़े ।।
।। ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे...।।

स्वर्ण सिंहासन बैठे, सिर पर छत्र फिरे, स्वामी सिर पर छत्र फिरे।
योगिनी मंगल गावैं, सब जय जय कार करैं। ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे...।।

गदा त्रिशूल हाथ में, शस्त्र बहुत धरे, स्वामी शस्त्र बहुत धरे।
दुख भय संकट मोचन, धनुष टंकार करें।
।। ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे...।।

भांति भांति के व्यंजन बहुत बने, स्वामी व्यंजन बहुत बने।
मोहन भोग लगावैं, साथ में उड़द चने।।
।। ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे...।।

बल बुद्धि विद्या दाता, हम तेरी शरण पड़े,
स्वामी हम तेरी शरण पड़े,अपने भक्तजनों के, सारे काम संवारे।
।। ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे...।।

मुकुट मणी की शोभा, मोतियन हार गले, स्वामी मोतियन हार गले।
अगर कपूर की बाती, घी की जोत जले।

।। ऊँ जै यक्ष कुबेर हरे...।।
यक्ष कुबेर जी की आरती, जो कोई नर गावे, स्वामी जो कोई नर गावे ।
कहत प्रेमपाल स्वामी, मनवांछित फल पावे।

।। इति श्री कुबेर आरती ।

जागरण
Network

जागरण jagran.com

ENGLISH Jagran

ਪੰਜਾਬੀ ਜਾਗਰਣ

ગુજરાતી જાગરણ

मराठी जागरण

JAGRAN Josh

जागरण TV

KHOJLE.com
A JAGRAN NEW MEDIA INITIATIVE

Herzindagi.com

विश्वास.News

नईदुनिया

Onlymyhealth

नोट: **लक्ष्मी पूजन 2024** पुस्तिका की समस्त सामग्री एवं लेखों के प्रकाशन में पूरी सावधानी बरती गई है।
फिर भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो इस संबंध में प्रकाशक स्वयं को सारे विधिक दायित्वों से मुक्त करता है।